बच्ची फूल की सारी सुगंध अपने भीतर उतार लेना चाहती थी। इस कोशिश में उसने फूल को लगातार अपनी छोटी सी नाक के पास टिका रखा था। वैसे तो फूल छोटा था पर इतना भी नहीं था कि नाक के ज़रिए उसे वह अपने भीतर में उतार लेती। बच्ची की यह कोशिश बहुत भोली थी।

मुझे उस वक्त किसी काम से बाहर जाना था। मैं घर के गेट से जब निकली तब तक वह गुड़िया चलते हुए मेरे सामने आ चुकी थी। अब भी वह उस फूल के साथ ही थी, सबसे बेखबर। मैंने उसे गुड़िया कह कर रोकना चाहा। बच्ची ने सुना और रुक गई, हैरत से मुझे देखने लगी। मैंने पूछा नाम क्या है तुम्हारा? वह बोली- हर्षिता और इस फूल का नाम? उसे नहीं मालूम था । इस फूल का क्या करोगी तुम? मेरे पूछने पर उसने बताया- देवा के लिए ले जा रही हूँ।

बच्ची को उसकी माँ ने पूजा के लिए फूल लाने के लिए भेजा था। तभी वह अपनी पसंद का फूल चुन कर घर लौट रही थी, लौटते वक्त रास्ते में उसने नरगिस की सारी सुगंध अपने पास रख ली और देवा के लिए रख लिया नरगिस का रंग। वैसे तो उस फूल का रंग भी उसके हाथ में आ चुका था। देवा के लिए अब केवल फूल ही बचा था। यह देवा की खुशकिस्मती थी कि बच्ची की नाक बहुत छोटी थी। फूल इसी कारण बच गया था।

हर्षिता से मैंने जानना चाहा कि क्या यही एक फूल देवा को चढ़ाओगी, तो उसने अपने दूसरे हाथ की मुट्ठी हाथ बढ़ा कर खोल दी, वहाँ दो छोटे-छोटे गुलाब थे। मुट्ठी में तुड़े-मुड़े, रूखे-सूखे, मुरझाये हुए फूल जिनकी लाल रंगत भी बासी हो चुकी थी। इतने पुराने थे फूल, सच कहूँ वे शक्ल से कहीं से भी गुलाब नहीं दिखते थे। फूल के नाम पर फूल ही नहीं। वैसे बच्ची के हाथ में कुल जमा तीन फूल थे। एक था सफेद नरगिस का फूल, जो अब गंधहीन था, दो लाल गुलाब थे जो थे रूखे -सूखे और मुरझाये हुए। हर्षिता उन्हें हाथ में लेकर इत्मीनान से घर की ओर लौट रही थी, अपनी उसी मस्त मगन चाल से, मैं उसे जाते हुए देखती रही।

उसकी जाती हुई पीठ को देख कर सोचती रही कि लोग तरोताजा फूल चुन कर ईश्वर को अर्पित करते हैं। हल्के हाथों से फूलों को पूजा के लिए सहेज कर रखते हैं कि उसकी कोई पत्ती न कहीं टूट जाए। फूल की सुगंध भी पूरी बरकरार रखते हैं, और इस भोली-मासूम बच्ची ने इसके विपरीत फूल चुन रखे हैं। मैं सोचने लगी कि देवा को इस तरह के भी फूल चढ़ने चाहिए, उन्हें भी तो मंदिर के अंदर बैठे हुए पता चले कि मंदिर के बाहर लगे सभी फूल ताजा नहीं होते हैं। सभी फूलों के चेहरे खिले हुए नहीं होते हैं और सभी फूल सुगंधित भी नहीं होते। फूल ऐसे भी होते हैं जैसे हर्षिता के हाथ में हैं। ऐसे फूल भी ईश्वर की झोली में जाकर गिरने चाहिए जिन पर देवा की दृष्टि नहीं जाती है, मंदिर की चौखट से बाहर निकल कर।

- 20 दिसम्बर 2016

6)

वक्त वक्त की बात होती है ...गर्मी के दिनों में सुबह के आलता रंगे पाँव पड़ी पायल के घुँघरूओं की खनक बंद दरवाजे की झिर्री से भी घर के अंदर चली आती है तड़के चार बजे और आकर ठहर जाती है आँगन में तुलसी चौरा के पास, बीती रात की उसे बातें बताने ...जहाँ तुलसी बैठी मिलती है उसे उसके इंतज़ार में।

वही सुबह सर्दी के दिनों में तब तक अपनी आँखें नहीं खोलती जब तक सूरज खुद नहीं चला आता है उसके सिरहाने, आकर अपने गुलाबी होठों से उसका जिद्दी माथा नहीं चूम लेता, सुबह अलसायी सी छः बजे तक बिस्तर पर पड़ी रहती है मुँह ढाँपे।

ऐसी रूठी सुबह का चेहरा मुझे देखना अच्छा लगता है और उससे भी अच्छा लगता है सुबह चार-पाँच बजे के बीच छत पर खड़े होकर आसमान की सड़क पर टहलते चाँद को देखना।

चाँद के साथ टहलने का मज़ा ही कुछ और होता है। एक बार आप चाँद का साथ तो माँग लीजिए फिर तो आप जिस सड़क जिस गली भी जाएँगे, हमकदम चाँद आपके साथ-साथ चलेगा।

एक अकेला चाँद दुनिया में सबका साथ देता है। कितना बड़ा दिल है उसका। साथ देने के लिए किसी को भी इंकार नहीं करता, और हम सब उसके दिल को न देख कर उसका सिर्फ चेहरा ही देखते रहते हैं। हम सब क्या, आसमान के सभी तारे भी सारी रात उसे ही तो बैठे हुए तकते हैं।

जो चाँद नज़र न आए नील गगन में ....ऐसा लगता है जैसे किसी ने आसमान के पलंग पर रुपहले सितारों वाली कढ़ाई की चादर तो बिछा दी है पर रुपहले चाँद का गाव तकिया वहाँ रखना भूल गया है।

कुछ दिनों से मुझे घर की ओर लौटते जाते सुबह के चाँद को देखना अच्छा लगता है। अच्छा लगता है उसके जाते हुए कदमों के निशान देखना। उन निशानों को गिनना, जबकि मुमकिन नहीं होता है तारों की तरह उन्हें उंगलियों पर गिनना।

मैं छत पर खड़ी देखती रहती हूँ चाँद को दूर जाते हुए। मेरी नज़र पीछा करती रहती हैं जाते हुए चाँद का। हालाँकि चाँद जानता है कि उसकी पीठ पर मेरी आँखें लगी हुई हैं पर मुड़ कर एक बार भी मुझे नहीं देखता ...मेरे मोह में पड़ जाने का उसे खतरा लगता है।

आसमान की सड़क के किनारे लगे बोर्ड पर लिखी सख्त हिदायत चलते जाते वह पढ़ना नहीं भूलता, सावधानी हटी दुर्घटना घटी। प्यार में नज़रें मिलने पर भी तो ऐसा ही होता है। यही सोच कर चाँद मुझसे निगाहें नहीं मिलाता। प्यार में मेरे घर की छत उसे डेंजर ज़ोन सी नज़र आती है।

हालांकि डॉक्टर ने मुझे भी हिदायत दे रखी है कि चार से पांच बजे के बीच छत पर नहीं जाना है सुबह के चाँद से मिलने। उसने बताया है मेरी नब्ज़ देख कर कि आठ भुजाओं वाले चाँद के ऑक्टोपस ने इन दिनों मुझे अपनी बाजुओं में जकड़ रखा है। मैं इस बात पर डॉक्टर से कहती हूँ कि बाँहें तो सूरज के पास होती हैं। चाँद तो निहत्था होता है, उसके पास तो सिर्फ पाँव होते हैं जो आता है आसमान की सड़क पर तलाशने अपना हमकदम और जाते हुए भी तो वह अकेले ही लौटता है।

जो होते चाँद के हाथ तो क्या वह हाथ नहीं बढ़ा देता मेरी ओर, अपना हाथ आगे बढ़ा कर मुझे छत से नहीं खींच लेता। अपने गले से नहीं लगा लेता क्या। मेरी बात सुन कर डॉक्टर मेरे हाथों में एक कागज़ थमा देता है। जहाँ रोग का नाम नहीं लिखा होता, चंद गोलियाँ लिखी होती हैं। गोल-गोल, मुझे उन गोलियों में दवाई नहीं